UNIT - I : गद्य संदेश (Prose)

भारतीय साहित्य की एकता - नन्द दुलारे वाजपायी

1. आत्मनिर्भरता - पं. बालकृष्ण भट्ट
2. अन्दर की पवित्रता - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3.

UNIT - II : कथा लोक (Short stories)

ठाकुर का कुआँ - प्रेमचंद

1. वापसी - उषा प्रियंवदा
2. सदाचार का तावीज - हरिशंकर परसाई
3.

UNIT - III व्याकरण (Grammar)

1. लिंग, वचन
2. काल
3. विलोम शब्द

UNIT - IV : कार्यालयीन शब्दावली

अंग्रेजी से हिन्दी, हिन्दी से अंग्रेजी

पत्र लेखन

UNIT - V

व्यक्तिगत पत्र (छुट्टी पत्र, पिता, मित्र के नाम पत्र, पुस्तक-विक्रेता के नाम पत्र)

भारतीय साहित्य की एकता

- नन्द दुलारे वाजपायी

कवि परिचय :-

नन्द दुलारे वाजपायी जी का जन्म सन् 1906 में उत्तर प्रदेश के मैमरेल नामक गाँव में हुआ था।

=> उनकी प्रारंभिक शिक्षा हजारीबाग में और उच्च शिक्षा काशी हिंदु विश्वविद्यालय में प्राप्त की।

=> वे भारत, काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरसागर बाद में गीताप्रेस और गोरखपुर में रामचरित मानस का संपादन किया।

=> वाजपाई जी सन् 1941 से 1947 तक काशी हिंदु विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहें तथा 1947 से 1965 तक सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने

1965 से वे विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैनक उपकुलपति नियुक्त हुए।

=> वे छायावादोत्तर युग के प्रख्यात समालोचक थे।

=> वाजपई जी ने भारतीय तथा पश्चात्य समीक्षा पद्धतियों का कहारा अध्ययन किया।

=> आपने छायावाद और रहस्यवाद सम्बन्धी भ्रान्तियों को दूर करने कि कोशिश की।

=> वाजपई जी 1967 अगस्त 21 को अचानक निधन हो गये।

प्रमुख कृतियाँ :-

हिन्दी साहित्य बीसवी सदी, आधुनिक साहित्य, जयशंकर प्रसाद, कवि निराला, प्रेमचंद, साहित्य विवेचन, हिन्दी साहित्य रचना और विचार, राष्ट्रीय साहित्य,

नयी कविता आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ माना जाते हैं।

पाठ का सारांश :-

हमारे देश में भाषाएँ अलग होने पर भी प्रकृति एक ही है, भारत देश में विभिन्न प्रकार के भाषाएँ बोलिजाते हैं, विविध प्रकार के संस्कृति साहित्य के लोग जीवन करते हैं, भारतीय साहित्य में आदान - प्रदान की परंपरा है,

उदाहरण के लिए बेंगाल में रवीन्द्रनाथ का काव्य, बंकिमचंद्र की उपन्यास, तथा द्विजेन्द्रराय के नाटकों को अनेक प्रदेश के लोग अपना लिया, हिन्दी में उन्ही भावनाओं और शैलियों की रचना कुछ साल पश्चात आरंभ हुई, इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य में आदान - प्रदान की परंपरा है,

विदेशों के नये साहित्य का परिचय जरूर प्राप्त करेंगे लेकिन आँख मूंदकर करने से कोई लाभ नहीं उठा सकते, क्योंकि प्रत्येक देश को अपनी विकास अपनी विशिष्ट परम्परा के अनुसार ही करना पडता है,

भारत देश अपनी विशिष्टता को बढाये रखने के लिए अपने साहित्य, अपनी कला और अपने जीवन दर्शन द्वारा संसार को एक नवीन दिशा और ज्ञान देने की चेष्टा किया, प्रगति दौडने की अपेक्षा, प्राचीन साहित्यिक वैभव की ओर दृष्टी डालना है, वाल्मीकि तथा कालिदास जैसे महान कवि भारत के लिए मूल्यवान है,

साहित्य की समृद्धि करने में बंगाल में चंडीदास, मिथिला में विद्यापति, उत्तर भारत में कबीर, तुलसी और सूर, महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, गुजरात में नरसी मेहता और राजस्थान में मीराबाई आदि लोगों ने हाथ दिये, सारे देश के भक्तों और संतों के कारण एकता साध्य हुई, भक्तिकाल को स्वर्णयुग इसीलिए कहा गया है, इस काल के कवि स्वान्त: सुखाय रचना करते थे, इतना ही नहीं उनके मूल्यवान काव्य से प्रजा में परिवर्तन आने लगा, उन दिनों कवि स्वार्थ के बजाय, लोकहित के लिए साहित्य का निर्माण करते थे,

भारतीयों के संस्कृति विश्व भर के संस्कृति से भिन्न है, विदेशों के नये से नये साहित्य का परिचय जरूर प्राप्त करें लेकिन आँख मुंदकर अनुसरण करने से कोई लाभ नहीं उठा सकते, हमारे प्राचीन साहित्य को अपना कर ~~क्रम~~ आगे बढने से विकास बिलकुल साध्य होगा,

माघ और भारति के काव्य अद्भुत शैली के चरम सीमा तक पहुँच ~~होगा~~, गये हैं,

जयदेव के गीतकाव्य अत्यद्भुत शृंगारिक काव्य है, उत्थान और पतन साहित्य में जरूर देख सकते हैं, रीतिकाल साहित्य के पतन का काल था, दरबारी कवि आश्रयदाता के लिए काव्य का निर्माण करते थे, उसके लिए शृंगारिक कविता लिखी जाती थी

रीतिकाल में चित्रकला और संगीत आदि कलाओं का भी प्रोत्साहन मिलता था, गुजरात, महाराष्ट्रा और

बंगाल के कवि (बजभाषा) में कृष्ण के लीलाओं का गान कर रहे थे,

उससे हम स्पष्ट है कि साहित्य देश को विभाजित न करके संगठित करने का माध्यम है,

हमारी एकता का रहस्य हमारे साहित्य की एकता ही है,

विशेषताएँ :-

=> इस पाठ में सुन्दर रेड्डी जी ने भारतीय साहित्य की विशेषताओं को भरपुर ढंग से व्यक्त किया है,

=> साहित्य समाज का दर्पण है, किन्तु समाज मे जो चलता है वही परिस्थितियों को साहित्य में प्रस्तुत किये जाते हैं,

=> स्वर्ण युग का वर्ण भी हमको इस पाठ में दिखाई देते हैं,

=> एक प्रोत के साहित्य की विशिष्ठता का अनुसरण करने का कारण भारतीय की एकता साध्य हो रहा है,

=> कालिदास और वाल्मीकि तथा भवभुति जैसे अन्य कवियों का वर्णन मिलता है,

=> सरल-तथा-सहज भाषा का प्रयोग,

सन्दर्भ सहित व्याख्याएँ :-

1. विभिन्न प्रदेश और जनपदों की सांस्कृतिक विशेषताओं की छापइन साहित्य में प्राप्त होती है, जो स्वाभाविक है,

प्रसंग :- पहला जैसा,

संदर्भ :- विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक विशेषताओं

के बारे में कहने का संदर्भ है,

व्याख्या :- साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य के द्वारा विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक विशेषताओं को जान सकते हैं, ~~इसके द्वारे~~ उदाहरण के लिए मराठी साहित्य के नाटकों की स्थिति प्रांतों की नाटकों से अपेक्षाकृत बहुत अच्छी है, इस प्रकार उत्तर भारत मे प्रेमचंद कृत उपन्यास तथा कहानियों को अपनी विशिष्ट शैली है, इस तरह एक-एक ~~(स्रोत)~~ प्रांत प्रत्येक विशिष्टता को लेकर आगे बढ रहा है,

विशेषताएँ :- एक प्रांत के साहित्य की विशिष्टता को अन्य प्रांत के लोग सराहते हैं तथा उसका अनुसरण करने से, भारतीय साहित्य की एकता साध्य हो रहा है,

=> प्रत्येक प्रांत की भाषा मे प्रत्येक विशिष्टताओं को जान सकते हैं,

=> सरल - तथा - सहज भाषा का प्रयोग,

2 यह आवश्यक नहीं कि जो कुछ नया है वह सब का सब अमित भी है, राष्ट्रीय संस्कृतियों के उत्थान और पतन के अवसर भिन्न - भिन्न हुआ करते हैं,

प्रसंग :- पहले जैसा,

संदर्भ :- प्रगति तभी साध्य है अपने प्राचीन साहित्य पर दृष्टी ~~लगाने~~ बचाने की अवसर पर संदर्भ है,

व्याख्या :- अपने देश के प्राचीन साहित्य को देखने से उसमे एक मुलभुत एकता दिखाई देगी, वालमिकि तथा कालिदास को सारे देश अपना समझता है, विभिन्न प्रांतों

के पंडित उन्हें अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करते थे, कालिदास वास्तव में किसी प्रांत के कवि नहीं थे, वे समग्र भारत के कवि रहे थे, ये महापुरुष विविधता में एकता लाने की चेष्टा की है, प्रगति के नाम पर दौड़ने के बजाय हमारे पुराने साहित्य के विभिन्न वैभव पर दृष्टि डालना है

विशेषताएँ :

=> कालिदास और अन्य साहित्यिक कवियों का वर्णन,
=> भारतीय के वैभव और प्रगति की सोच,
=> अपने पास जो चीज है उसकी महत्ता को कोई नहीं जानते,
=> प्रगति के नाम पर दौड़ना बेहतर के हमारे पुराने साहित्य का अनुसरण करना है,
=> सरल तथा सहज भाषा का प्रयोग,

4. कालिदास और भवभूति का संपूर्ण प्रदेश भारतीय वस्तु है, वह किसी प्रदेश का उत्तराधिकारी नहीं,

प्रसंग :- पहले जैसा
संदर्भ :- कवि इस संदर्भ में कालिदास और भवभूति के बारे में प्रस्तुत करते हैं,
व्याख्या :- ये दोनों भारतीय वैभव युग के प्रतिनिधि कवि हैं, एक तो प्रारंभिक वैभव से संबंध रखते हैं तो दूसरे वैभव के परिपाक की चरमावस्था से दोनों की कृतियों से हम समझ सकते हैं कि गाड़ि जिस तरह दो पहलुवों के बिना आगे न बढ सकती उसी तरह उनके

बिना भारतीय साहित्य भी उनके काव्यों के द्वारा जिन मूल्य प्रतिष्ठित हुई हैं, वे बहुत अधिक स्थायी मूल्य हैं,

विशेषताएँ :-

=> कवि इस संदर्भ में कालिदास और भवभूत किसी प्रांत का नहीं वे सारे देश के हैं,

=> भारतीय साहित्य रूपी गाड़ी के लिए दोनों पहिए हैं,

=> ये कवियों ने भारतीय साहित्य को दी गई योगदान का प्रस्तुत किया गया हैं,

=> सरल तथा सहज भाषा का प्रयोग,

(5) हम तो केवल यह देखते हैं कि चौदहवी से सत्रहवी शताब्दी तक समस्त देश में एकही साहित्यिक ध्वनि रही थी,

(या)

14 वीं तथा 17 वी शताब्दी को "स्वर्ण युग" क्यों कहलाते हैं सोदाहरण कीजिए,

ज) प्रसंग :- पहले जैसा

संदर्भ :- धार्मिक प्रेरणा (14 वी से 17) वी तक भक्तिकाल में देखने को मिलेगा,

व्याख्या :- जयदेव के गीतगोविंद राधाकृष्ण के श्रृंगार वर्णनों से भरा पड़ा माधुर्य काव्य हैं,

चंडीदास, विद्यापति, कबीर, तुलसी, सूरदास, ज्ञानदेव, नरसी मेहता और मीराबाई जैसे कवियों के द्वारा साहित्य का वैभव बढ़ गया,

~~भक्तिकाल~~ सारे देश के भक्तों और स्त्रोतों के

कारण एकता साध्य हुई उन महान कवियों के कारण भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा गया है।

भगवान पर विश्वास रखकर, उनके कष्टों को सहते हुए, स्वांथी का त्याग करके मूल्यवान साहित्य को हमारे तक पहुँचा दिया, लोकहित के अलावा उनके साहित्य में दूसरा न दिखाई देगा,

विशेषताएँ :

=> धार्मिक चेतना के कारण पीडित जनता मुक्त हो गया,

=> चौदहवी से लेकर सत्रहवी शताब्दी को स्वर्ण युग कहने का वर्णन प्रस्तुत किया गया है,

=> सारे - प्रांत से महान हैं,

मुख्य प्रश्न :- (Important Questions)

1) देश की विविधता में एकता लाने के लिए किये गये प्रेरनों पर प्रकाश डालिए,

2) भारतीय साहित्य में एकता के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए,

3) भारतीय साहित्य की विशिष्टताओं का उल्लेख की जिए,

4) चोदहवी से लेकर सत्राहवी तक के युग को क्यों स्वर्णयुग कहते हैं साबित की जिए,

5) विविध - प्रकार के साहित्य संस्कृति कवियों के वर्णन कीजिए,